

# फुलवारी

रामानुज यादव 'सूरन'



# फुलवारी



**First Edition**

**By**

**Ramanuj Yadav Suran**  
रामानुज यादव सूरन



**Title of the Book:** फुलवारी

**First Edition:** 2024

**Copyright 2024 © Ramanuj Yadav (रामानुज यादव),** Government Press Colony, Radhakrishna Mandir, Dabha, Nagpur, Maharashtra, India.

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

**Disclaimer**

The author is solely responsible for the contents published in this book. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

**E ISBN: 978-93-6252-345-7**

**MRP Rs. 190/-**

**Publisher, Printed at & Distribution by:**

Selfypage Developers Pvt Ltd.,  
Pushpagiri Complex,  
Beside SBI Housing Board,  
K.M. Road Chikkamagaluru, Karnataka.  
Tel.: +91-8861518868  
E-mail: info@iipbooks.com

**IMPRINT: I I P Iterative International Publishers**

**For Sales Enquiries:**

Contact: +91- 8861511583  
E-mail: sales@iipbooks.com



## **Main Content of the Book**

This book contains poems describing various aspects and facts of human life particularly human relation, human behaviour, humanity, nature, exploitation of natural resources on the name of development, increase in water pollution and air pollution etc. and impact of those on our day to day life patterns. Certain poems, also describe social anomalies and how to curb that. Poet has tried to answer many questions on social evils and how to win over them.

All poems describe and indicate various corrective action, where man damages natural resources like trees, mountains, lakes, rivers and oceans, continuously digging earth deeply for gases, oils, minerals, coal, water are dangerous to high extent causing earthquakes, havoc, rising temperature, melting glaciers, untimely rains, floods, droughts etc. Further bombarding on earth and oceans causes unlimited damage to ecology. Though these mis-happenings seem natural but certainly not, these are purely man-made.

Each poem gives beauty and fragrance like flowers used for medicines, decorations and many more. Poet has compared and is trying to establish that as small and big flowers have their own usefulness, the poems do send some important signals to tell us how to keep away wrong doings and selfish attitudes to make world full of joy, happiness. beauty and fragrance as flowers do. Like eye pleasing flowers on trees and plants these poems will do better for our food of thought and doing well beings of humanity, the basic theme of the book. "फुलवारी"

*Ramanuj Yadav Suran*

## Preface (प्रस्तावना)

मेरी हिंदी प्रस्तुति 'फूलवारी' आपके समक्ष है तरह-तरह के फूलों की  
अलग-अलग मनभावन सुगंध लिए हुए।

आशा करता हूं कि ये फूल आपको भी पसंद आयेंगे। इस पुस्तक में  
जिंदगी के तमाम पहलुओं को दर्शाया गया है।

इनमें विविधता भी है और विधाएं भी। प्रत्येक कविता का अपना  
अलग-अलग स्वरूप है विशेषता हर एक फूल का

अपना आकार, अपनी सुंदरता और अपनी सुगंध। प्रयास किया है कि  
हर कविता पाठक को कुछ ना कुछ संदेश

दे, मानवता के बारे में, मानवीय व्यवहारों के बारे में, सूरज और धरती  
के बारे में, आसमान चांद तारों सितारों के

बारे में। सौर्य मंडल द्वारा प्राकृतिक विकास और धरती मां द्वारा हर  
एक प्राणी का पालन पोषण, प्रकृति का संवर्धन

एवं संरक्षण इत्यादि के बारे में चिन्हित किया गया है छोटे बड़े  
उदाहरण द्वारा कविता के माध्यम से। प्रत्येक कविता

का अपना अवलोकन हो, निर्देश हो, संदेश हो, यही मूल सोच है इस  
पुस्तक में।

जब संसार का पहला कवि अपनी पहली कविता लिखी होगी तो  
शर्तिया फूल पर ही लिखी होगी।

"फूल तू कितना सुंदर है साकार है ।  
रूप में अनेकता, रंग में अनेकता और  
तो और तमाम सुगंध का भण्डार है ।  
भव्य फूल तू कितना सुंदर है साकार है । "

फूल तमाम गुणों की खान है स्वच्छ, सुंदर, कोमल, मनोहर, प्रसन्नचित,  
औषधियुक्त इत्यादि इत्यादि । मैंने फूल से

प्रेरित होकर ही इस काव्य पुस्तक के नाम की परिकल्पना की और  
नाम दिया 'फूलवारी' ।

अलग-अलग फूलों की अलग-अलग उपयोगी गुणों को आधार मानें तो  
इन कविताओं के अलग-अलग आकार हैं, अलग-अलग भावार्थ हैं  
और सबकी अपनी उत्तम उपयोगिता । हर कविता जीवन के किसी न  
किसी पहलू को दर्शाएगी, पाठक को हंसाएगी, और कभी-कभी गंभीर  
विषयों पर सोचने के लिए बाध्य भी करेगी ।

**उदारणार्थ.....**

- आज हमारे शहर के एक पुल ने अपनी नदी में कूद कर  
खुदकुशी कर ली ।
- दुनिया की सबसे बड़ी बीमारी गरीबी । पास आना तो दूर हाल ना  
पूछे कोई करीबी ॥
- सूरन ने राहत की सांस ली आखिरी सांस पर ।  
चाहत को राहत कहीं भी कभी भी मिली ही नहीं ।

- जब से चांद खिड़की से निकाल कर छत पर टहलने लगा है।  
चांद की कसम आकाश का चांद तो उससे जलने लगा है।
- जो छुपता है दिखता है वह दरअसल होता है क्या ?  
खुद के दुख में रोता पराए दुख में रोता है क्या ?
- उड़ती हुई तितलियों के पंख नोच लेते हैं लोग  
सिर्फ खुद के मजे के लिए।
- क्या कभी सोचा की कुदरत ने बनाई तितलियां  
इतनी कठोर सजा के लिए।

आशान्वित हूं कि ए प्रस्तुति पाठक गण को पसंद आएगी और मैं प्रेरित होकर कुछ और सुंदर रचनाएं प्रस्तुत करने का हौसला बना सकूंगा।

रामानुज यादव सूरन



## Acknowledgements (स्वीकृतियाँ)

My sincere thanks and gratitude to all of my nears and dears as well IIP team for liking my poems and helping a lot to get those published in book format.

*Suran*

## Contents (अंतर्वस्तु)

1	ए दुनिया जन्मभूमि है मर के ना आना है ।	1
2	जुबान को लगाम दो ।	3
3	प्रातः सूरज की किरणें पत्तों के आंसू पी जाते ।	4
4	पानी आग बिजली में खेलना नहीं ।	5
5	जाइएगा पर कदम के निशान छोड़ जाइएगा ।	7
6	सोमवार की सुबह रविवार की	8
7	जमीर होना चाहिए तकरीर में क्या रखा है ।	9
8	दुनिया की क्या करें सूरन हंसी आती है ।	10
9	किस-किस से पंगा लो कितना बुरा जमाना ।	11
10	मेरी समझ को नासमझ	12
11	कल मेरी झूठ से पहचान हो गई तौबा ।	13
12	'फूल की सजा'	14
13	जागृति के लिए बदलाव मंशा तो सही हो ।	16
14	तस्वीर तुम्हारी मेरी यादों में बस गई ।	17
15	इस कदर जमी मेरे दिल में शख्सियत उनकी	19
16	बंदा निर्दोष था	20
17	शादी के बाद तुरंत उसी रात	21
18	तिनके तिनके पर तुम्हारा ही निशां मैं कहां ।	23
19	आजकल तो मित्र भी चलचित्र जैसे हो गए ।	24
20	वो कत्ल की रात कितनी हसीन थी	25

21	अजब गजब से तरह-तरह के फूल हैं तुम्हारी दुनिया में	26
22	दुनिया की सबसे बड़ी बीमारी है गरीबी।	28
23	खुशामदी तो बहुत कि मैंने उसकी	29
24	जीवन एक गीत है।	30
25	चाहत को राहत कहीं भी कभी भी मिली ही नहीं।	31
26	जब से चांद खिड़की से निकलकर	32
27	कभी-कभी बरसात की इक बूंद को तरसता बादल।	33
28	हम बेफिकर थे अपनी ही धुन में	34
29	विचारों के मंथन का गूथन सा हो गया	35
30	जो छपता है दिखता है वह दरअसल होता है क्या ?	36
31	उड़ती हुई तितलियों के पंख नोच लेते हैं लोग	37
32	रंग रंगीला बनना ही है तो शौक से बनें।	38
33	तन में आठ कोण मन में अनेक मोड़	39
34	आज मैंने अपने गुनाहों की रपट लिखवा दी।	40
35	कुछ ने कुछ से कहा कि कुछ बिगड़ रहे हैं।	42
36	समय का गणित तो देखो सूरन	43
37	कुछ भी नहीं मिला मुझको इतना पसारा करके।	44
38	बड़ा ही सुकून मिलता है तुम्हारे आने से।	45
39	भूलना भी क्या जो भुलाने से भी भुलाए नहीं जाते	46
40	उनके रहम बेरहम का मुकाम कुछ बाकी है क्या ?	47
41	तुम बुलाओ या ना बुलाओ	48
42	बहँकते कदम कांपते हाथ	49

43	ईमानदारी भी बड़ा कठिन रोग है सूरन	50
44	मेरी वफ़ा भी दफ़ा हो गई	51
45	काश कि हम तुमको कातिल करार कर पाते ।	52
46	वो बचपन का आजाद मन साफ़ मन	53
47	हमसे उनका अपमान देखा ना गया ।	54
48	कहीं आसमान से तारे तो नहीं टूट पड़े।	55
49	जिंदगी सब की हो कैसी ।	56
50	अति की अहम गति अंत की ओर ।	58
51	चलो छोड़ो बहुत हुआ हसीं मजाक	59
52	उनकी अदा को क्या बयां करूं ।	60
53	जिद गर काम की हो तो वो भी अच्छी ।	61
54	दूसरों के बारे में पढ़ने सुनने और समझने में	62
55	बड़ा ही महंगा शौक है सूरन	63
56	होठों की मुस्कुराहट मन की मचलाहट सब खींच लूंगा ।	64
57	कठिन परिश्रम से कोई पद पाता है ।	65
58	जिंदगी जहां जमाना जन्नत	66
59	देखा जो कुछ करीब से हमने अपने करीब को	67
60	मत पूछिए खैरियत मेरी	68
61	छूट गई बादशाही लुट गए राजपाट ।	69
62	मोह के फेर में फंसा तो फंसता ही गया ।	70
63	कभी-कभी ए मन उदास होता है ।	71
64	इश्क बहुत महंगा शौक है सूरन	72

65	उम्र कहती है भजन कर	73
66	हमने कसम ली कसम से	74
67	जिंदगी के गणित से स्कूल की गणित आसान है।	75
68	इंसान जब इंसानियत का गला घोंट दे	76
69	कहानी क्या बयां करें किसी की	77
70	कौन यहां सदाबहार होने आया है?	78
71	स्वभाव में भीनी उसकी यादें महक गई।	80
72	हम से हमीं को चुरा के तो दिखाओ।	82
73	मन रमता कहां अमेरिका कनाडा जापान में।	83
74	महफिल तो उन्हीं की थी	84
75	सूरन अहंकार एक नशा है।	85
76	भेद वही जो कि अभेद है।	86
77	सूरज महादेव और धरती मां देवी।	87
78	आज वह फिर याद आने लगे हैं।	88
79	बहुतेरो की फितरत बहुतेरी	90
80	जड़ता चेतन कहां कितना	91
81	अच्छा ही हुआ वो चले गए मेरी जिंदगी से	93
82	जब चलती रहे गाड़ी, बनी रहे बाड़ी	94
83	मिटना भी पड़े अगर	95
84	वो कहते हैं कहने दो जो कुछ कहते कह जाने दो।	96
85	रात में ...	97
86	चाहे सूरज चमके चाहे चंदा दमके।	98
87	नदिया में घनेरा पानी फिर भी सागर में गिरती है।	99

88	हंसती आंखों में पानी ।	100
89	रोते हुए आए है रोते हुए ही जाना है ।	101
90	सारी हदें तोड़ के हम तो बड़े बदनाम हो गए हैं ।	102
91	सच में सच कुछ भी नहीं सूरन सब सपना हैं ।	103
92	हम भी रहते थे कभी बड़ी ऊंची	104
93	इस नाचीज़ को हम नहीं	105
94	फूलों का कत्ल करके हमने पत्थर पर चढ़ा दिया ।	106
95	इंसा का नाम से नहीं काम से ही पहचान है ।	107
96	खुशहाल जिंदगी का मतलब	108
97	जिंदगी इक गुच्छे में सवाल है ।	109
98	निर्बल को सबल, सबल को निर्बल बनाती लाठी ।	110
99	दर्द में उलझन उलझन में दर्द	111
100	आग में कहां इतनी ताकत कि	112
101	सूरज चांद धरती जल हवा आग महान है ।	113
102	वक्त सच्चाई का साथ देता है ।	114
103	लेनदेन किसी का भी करो पर गाली का नहीं	115
104	जब मन में कहीं काफी रोष होता है ।	116
105	हमारी जरूरत नहीं है अब ।	117
106	जिसके गुनाहों की फेहरिस्त जितनी लंबी	118
107	कमी नहीं थी उनके गुनाहों के खजाने में	119
108	कभी कोई गलती होने की आशंका नहीं	120
109	उनकी तहज़ीब ने हमारे दिल में	121
110	गुनाह उनका जारी था ।	122

111	जब धरती को तोड़ फोड़ के खोद के खुरेद के	123
112	बदनाम होने के लिए हम तुम्हारी महफ़िल में	124
113	इंसान की भीड़ तो बढ़ती जा रही जमीन पे	125
114	जो खुद को संभाल सकते नहीं	126
115	हम गरीबी में जन्में हैं तो न दो गारी ।	127
116	न करो इस क़दर अपनी वाह वाही की	128
117	सूरन आज हम अनजान बन के बैठे हैं ।	129
118	इम्तिहान न लो हमारी ईमानदारी का	130
119	वो हुजूर थे अपने नगर के	131
120	जब जन्में तो मां बाप का वास्ता ।	132
121	दिल की दिल को लगने दो।	133
122	दरअसल दिल इक साफ आईना है ।	134
123	बात है तो बात है बात ही की बात है ।	135
124	में चाहता था किसी बेगम का बादशाह बनना	136
125	घर आके खाना फिर खेलने जाना ।	137
126	सुना है उनकी किस्मत चमकती है	138
127	कुदरत से खेलो बिगाड़ो नहीं सुख भोगो	139
128	मत पूछो सूरन कि आजकल हम कैसे जी लेते हैं ।	140
129	हम तो उनसे भले हैं	141
130	खूबसूरत जवानी का इतना असर	142
131	मासूम तो हम भी थे	143
132	गर यों ही गुल खिलाते रहे तो	144
133	मौन होके भी बहुत कुछ कह जाना	145

134	बलखाती बलखाती बलखाती रे	146
135	धर्म धरती पर ही रह गया	147
136	ममता और माता विधि और विधाता भूल पता कौन है ?	149
137	सच ईमानदारी मेहनत आजकल दिखाई कहां देते हैं?	150
138	जाके दे दो संदेशा नहीं कोई अंदेशा	151
139	रात भर लिपटती रही मुझसे वो सर्द हवाएं।	152
140	नवजवान बातें करते तो कुत्ते से	153
141	सच है सही है शाश्वत है और साकार है।	154
142	आज हमारे शहर के एक पुल ने	155
143	आप उन्नतशील है तो आपके अपने	156
144	भांति भांति के फूल खिले हैं	157
145	कभी होते थे हम भी चर्चाए-खास	158
146	वो पत्थर को पूजकर आए थे	159
147	कठिनाइयां बेशुमार थी फिर भी बहार थी।	160
148	गर गरज है हमारी दुनिया को	161
149	मुझको वो मिले मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी।	162
150	तुम्हारा तो पता नहीं पर हम तुम्हीं पर मरते हैं।	163
151	सुलगते सुलगते जलते जलते	164
152	जी चाहता है सारे जग को	165
153	घटेगी तुम्हारी उमर धीरे-धीरे।	167
154	काश मेरी आंखें पत्थर की होतीं पानी की नहीं।	168
155	सुना है उनका भी कभी जमाना था।	169



156	सूरन आखिर इंसान का मुस्तकिल मुकाम क्या है ?	170
157	तुम्हारे हाथ के गिलास का पानी	171
158	छुप छुप के निहारता वो बादलों की घटा से।	172

## लेखक परिचय



एक टेक्स्टाईल-टेक्नोक्रेट की पचास साल तक कपड़ा मिलों में उच्च पदों पर काम करने के उपरांत हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश नया तो नहीं है मेरे लिए उम्र के अमृत-वर्ष में। स्कूल-कॉलेज के दिनों में नई-नई कविताएँ लिखने और सुनाने का शौक रहा। मेरी कुछ कविताएँ पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई थीं उस समय। मैने अबतक 125 लेख लिखे हैं टेक्स्टाईल-टेक्नोलाजी और प्रबंधन पर इंगलिश में पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के लिए। मेरी अभीतक प्रकाशित पुस्तकें 'प्रॉडक्टीविटी' इंगलिश में, 'बिखरे फूल' और 'निखरते फूल' हिंदी में। 'सूरन' मेरे जन्म-स्थान का नाम है। अतएव जननी- जन्मभूमि के स्मरणार्थ 'सूरन' उपनाम में अपनी हिंदी रचनाओं में प्रयोग में ला रहा हूँ।

सरल सहज सुंदर सफल  
सार्थक सजल स्निग्ध अतिशय ।  
छण-भंगुर ए जीवन  
यही मेरा शाश्वत परिचय ॥

- सूरन



Selfypage Developers Pvt Ltd

ISBN: 978-93-6252-345-7



9 789362 523457

MRP Rs. 190/-